विपक्षी महागठबंधन की राह में बसपा की माया

बहुजन समाज पार्टी की नेता मायावती ने छत्तीसगढ़ के बाद मध्य प्रदेश और राजस्थान के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से गठबंधन न करने का एलान करके विपक्षी एकता की उम्मीद को एक और झटका दे दिया है। अब इसकी व्याख्या क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति के आधार पर होगी और उसके निष्कर्ष अलग-अलग होंगे। इसके बावजूद परिणाम यही निकल रहा है कि मायावती के इस फैसले से आखिरकार फायदा भाजपा को ही होना है। मायावती ने कहा है कि कांग्रेस के भीतर एक तरह का जातिवादी और साम्प्रदायिक मानस काम कर रहा है, जो भाजपा की मदद करना चाहता है और बसपा से समझौता करने में बाधा डाल रहा है। दूसरी तरफ कांग्रेस के नेता दिग्विजय सिंह का यह कहना है कि मायावती प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआई के दबाव में गई हैं और इसीलिए वे गठबंधन तोड़ रही हैं। इन मनोगत आरोपों की सच्चाई पता करना कठिन है लेकिन, एक बात जरूर है कि मायावती की महत्वाकांक्षा प्रधानमंत्री बनने की है और वे इसीलिए अपने लिए ज्यादा से ज्यादा सत्ता और सीटें जमा करना चाहती हैं। दूसरी ओर कांग्रेस सरकार विरोधी माहौल का इस्तेमाल करके इस बार मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में अपनी वापसी करने के लिए प्रयासरत है। बसपा के विपरीत कांग्रेस के भीतर एक क्षेत्रीय नेतृत्व है, जो बसपा को राजस्थान में 10 मध्य प्रदेश में 20 और छत्तीसगढ़ में 6 से ज्यादा सीटें देने को तैयार नहीं है। मायावती हर जगह इससे दूनी और ढाई गुनी सीटें मांग रही हैं। उनका कहना है कि हमारा मतदाता वोट बैंक की तरह गठबंधन वाले दल को सारे वोट ट्रान्सफर कर देता है, जबकि सवर्ण मतदाता ऐसा नहीं करता। वे अगर यह नहीं समझ रही हैं कि उनका मतदाता भाजपा से खफा है तो यह उनकी भूल है। अब उनका जनाधार वैसा नहीं है जैसा पहले हुआ करता था। उनका मतदाता कांग्रेस की ओर भी झुक रहा है इसके संकेत हैं। मायावती के इस रुख में विपक्षी महागठबंधन के लिए उम्मीद की किरण यही है कि मायावती ने अभी भी राहुल गांधी और सोनिया गांधी के लिए सम्मान व्यक्त किया है। उनका कहना है कि वे लोग गठबंधन चाहते हैं लेकिन, क्षेत्रीय नेतृत्व अड़चन डाल रहा है। अब देखना है कि अखिलेश यादव का सुझाव मानते हुए कांग्रेस का नेतृत्व देश के सामने विकल्प तैयार करने की बड़ी जिम्मेदारी कैसे निभाता है और उसके लिए कितनी कुर्बानी देता है।

शरीर प्रधान नहीं, आत्मा केंद्रित हो जीवन

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

ये शरीर को ही सबकुछ मानने के दिन हैं। वैसे तो अनंत काल से शरीर की प्रधानता रही है। लगभग हर युग में लोगों ने शरीर को विलास का साधन माना और खूब भोग किया भी लेकिन, तब कुछ लोग नैतिकता का प्रमाण थे। आम व्यक्ति के पास विकल्प था कि भोग चुनें या भक्ति, प्रतिष्ठा चुने या चरित्र, शरीर चुनें या आत्मा..। पिछले दिनों तो देश के नीति-निर्धारकों ने कुछ ऐसे निर्णय सुनाए कि लगने लगा भारत तकनीकी और भौतिक दृष्टि से दूसरे कई देशों की बराबरी कर लेगा या आगे निकल जाएगा, लेकिन साथ ही यहां देहप्रधान जीवन आने लगेगा इसकी भी घोषणाएं हो रही हैं। शरीर के मामले में जो कानूनी परिभाषाएं हुई हैं उनसे तो ऐसा लगा जैसे हर शरीर के सामने भोग की थाली रख दी हो, भोग के वस्त्र पहना दिए हों। फिर तो शरीर से शरीर की वासना बहना ही है। प्रेम ऐसे शरीर से निकल ही नहीं सकता जो आत्मा तक की यात्रा न करे। जिन्हें अपने शरीर से वासना का प्रवाह कम करना हो, उसकी दिशा मोड़ना हो या उसका प्रवाह दूसरों में करना हो उन्हें अब अध्यात्म का सहारा लेना पड़ेगा। खास तौर पर आज के बच्चों को शरीर का अर्थ समझाने के लिए कानून नहीं, अध्यात्म की जरूरत है। वरना वासनाओं के जो थपेड़े अभी चहारदीवारी के बाहर बह रहे हैं वो घर के कोने-कोने में बहने लगेंगे। नैतिकता तो जैसे जन्म लेते ही मर जाएगी। तब याद आएगा जीवन शरीर प्रधान नहीं, आत्मा केंद्रित होना चाहिए। अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित रखना हो तो यह सीख उनको समय रहते दे दीजिए।

जीने की राह कॉलम पं. विजयशंकर मेहता जी की आवाज में मोबाइल पर सुनने के लिए टाइप करें JKR और भेजें 9200001164 पर

उन लोगों को सम्मान दीजिए जो हमसे अलग हैं

संदर्भ... अपनी खुली और उल्लासपूर्ण भारतीय परम्पराओं से सीखकर पुरानी रूढ़ियों से मुक्त होना होगा

गुरचरण दास
स्तंभकार और लेखक
gurcharandas@gmail.com

मेरा बेटा समलैंगिक है और अब मुझे इसे स्वीकार करने में कोई डर नहीं है। वह बीते 20 वर्षों से अपने पार्टनर के साथ आपसी विश्वास और प्रसन्नता भरी ज़िंदगी बिता रहा है। मेरे परिवार व नज़दीकी मित्रों ने इसे गरिमापूर्वक स्वीकार किया है। लेकिन, मैं इसके बारे में सार्वजनिक तौर पर बोलने से डरता था कि कहीं उसे कोई नुकसान न हो जाए। पिछले माह सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिकता को अपराध के दायरे से बाहर कर दिया। मेरी पत्नी और मुझे अचानक लगा कि जैसे बहुत बड़ा बोझ सिर से उतर गया है। मुख्य न्यायाधीश के बुद्धिमत्ता भरे शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे, 'मैं जो हूं, वैसा हूं, इसलिए मुझे उसी रूप में स्वीकार कीजिए।'

157 साल तक भारतीय इस तानाशाही औपनिवेशिक कानून के तहत रहे, जो हमारे देश की प्राचीन भावना के विपरीत था। इस बीच अंग्रेजों को अपनी गलती का अहसास हुआ कि 'यौन रुझान प्राकृतिक होता है और लोगों का इस पर कोई नियंत्रण नहीं होता' (जैसा कि कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है) और उन्होंने ब्रिटेन में यह कानून बहुत पहले खत्म कर दिया। त्रासदी यह रही कि औपनिवेशिक ब्रेनवाशिंग इतनी गहरी थी कि यह थोपी गई गैर-भारतीय धारणा भारतीय कानून की किताब में अंग्रेजों के जाने के 71 साल बाद तक बनी रही। अगस्त 1947 में मैं इतना छोटा था कि राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होने का अर्थ समझ नहीं सकता था लेकिन, निश्चित ही मैं इतना वयस्क हो चुका था कि जुलाई 1991 में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता का जश्न मना सकूं। और 6 सितंबर 2018 को मैं इतना बुजुर्ग भी नहीं हुआ था कि अपनी 'भावनात्मक स्वतंत्रता' की सराहना न कर सकूं। भारत संक्रमण से गुजरता हुआ परम्परा से आधुनिकता में जा रहा है। हम बहुत समय तक अपनी भावना का दमन करके पितृसत्तात्मक रूढ़िओं के साथ जीवन जीते रहे हैं।

हालांकि, न्यायाधीशों ने अपने ऐतिहासिक फैसले के समर्थन में महान पश्चिमी लेखकों को उद्धृत किया है लेकिन, वे भारतीय शास्त्रों को भी उद्धृत कर सकते थे, जिन्होंने लैंगिक अस्पष्टता के लिए असाधारण सहनशीलता दिखाई है। इन्हें तथ्यात्मकता के साथ बिना किसी शर्म या अपराध-बोध के बताया गया है। वनिता और किदवई की किताब 'सेम सेक्स लव इन इंडिया : रीडिंग्स फ्राम लिटरेचर एंड हिस्ट्री' में बहुत उदाहरण हैं।

भारत एकमात्र ऐसी सभ्यता है, जिसने 'काम' अथवा कामना व सुख को जीवन का उद्देश्य तय किया। जीवन के अन्य तीन उद्देश्यों अर्थ (भौतिक कल्याण), धर्म (नैतिक कल्याण) और मोक्ष (आध्यात्मिक कल्याण) के साथ हमसे 'काम' के भावनात्मक कल्याण का लाभ उठाने की अपेक्षा रहती है। हमें लगातार धर्म यानी दूसरों के प्रति हमारे कर्तव्य की याद दिलाई जाती है लेकिन, यह विचार हमसे छूट जाता है कि काम खुद के प्रति हमारा कर्तव्य है। ईसाई परम्परा के अनुसार शुरुआत में प्रकाश (जेनेसिस) था। ऋग्वेद में शुरुआत में काम था और सृष्टि का निर्माण उस 'एक' के मन में मौजूद 'काम' के बीज से हुआ। 'काम' चेतना का पहला कर्म था और प्राचीन भारतीय इसे शक्ति कहते थे। इसके विपरीत 'काम' को ईसाइयत में 'ओरिजिनल सिन' (मूल पाप), अपराध-बोध और शर्म के साथ जोड़ा गया है।

आज के भारतीय मध्यवर्ग के पाखंड के लिए हम विक्टोरिया युग के लोगों को दोष देते हैं लेकिन, भारतीय मानस की गहराई में 'काम' को लेकर नैराश्य झलकता है। 2500 साल से भी पहले उत्तर भारत के जंगलों में प्राचीन योगियों, त्यागियों और बुद्ध को 'काम' के असंतुष्ट रहने वाले चरित्र का बोध हुआ था। योगियों ने इस अंतहीन, निरर्थक, प्रयास को शांत करने के तरीके खोजने चाहे। मन की चंचलता को शांत करने के लिए पतंजलि ने हमें चित्तवृत्तिनिरोध सिखाया। शिव ने कामदेव को तब भस्म कर दिया था, जब उसने उनका हजार साल का ध्यान भंग कर दिया था। इसलिए कामेच्छा मन में अनंग (यानी कायाहीन) रहती है। भगवद गीता का जवाब है निष्काम कर्म लेकिन, यह कठिन है, क्योंकि बृहदकारण्य उपनिषद के अनुसार 'मन ही इच्छा' है।

निराशावादियों के विपरीत आशावादियों ने सिखाया कि काम जीवन ऊर्जा है, एक ब्रह्मांडीय ऊर्जा, जिसने कोशिका को सक्रिय कर इसे सही स्थान दिया। चूंकि काम कर्म, निर्मिति और प्रजनन का स्रोत है इसलिए उनका आशावाद पहली सहस्त्राब्दी के संस्कृति प्रेम काव्य और 'कामसूत्र' जैसी रचनाओं में चरम पर पहुंचा, जो कोई सेक्स मेन्युअल नहीं है बल्कि आर्ट ऑफ लिविंग की आकर्षक, आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक गाइड है। आशावादियों और निराशावादियों के टकराव के बीच काम-वास्तववादी उभरकर आए, जिन्होंने यह कहकर सुलह की पेशकश की कि सेक्स तब तक ठीक है, जब तक यह विवाह के भीतर रहे। इस पूर्व-आधुनिक समय में उस नकारात्मकता के साथ ब्रिटिश लोगों का प्रवेश हुआ, जिसे जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने तिरस्कारपूर्वक 'विक्टोरिया युगीन मध्यवर्गीय नैतिकता' कहा था और उन्होंने 377 जैसे कानून बनाए।

सौभाग्य से 1990 के दशक में भारत में अधिक आशावादी युग शुरु हुआ, जब युवाओं के मन से औपनिवेशिक प्रभाव खत्म होने लगा। यह 2009 में चरम पर पहुंचा जब दिल्ली हाईकोर्ट के जज जेपी शाह ने समलैंगिक संबंधों पर ऐतिहासिक फैसला सुनाया। 2013 के बाद जब उच्चतर न्यायालय ने इसे उलटा तो कुछ समय के लिए हम पीछे लौटें। लेकिन, गत माह के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद काम को लेकर आशावाद के नए युग की शुरुआत हुई। समाज के पूर्वग्रह पर कोर्ट के फैसले को हावी होने में वक्त लगेगा खासतौर पर उस दौर में जब दक्षिणपंथी निगरानी दस्ते लव-जिहाद, वेलेन्टाइन डे (जिसे शशि थरूर के मुताबिक 'कामदेव दिवस' नाम दिया जाना चाहिए) और 'रोमियो' दस्ते कहर ढा रहे हों।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का निहितार्थ यह है कि सभ्य होने का मतलब यह कहना है : 'मैं विपरीत लैंगिकता को प्राथमिकता देता हूं पर मुझे समान लैंगिकता के लिए आपकी प्राथमिकता पर आपत्ति नहीं है।' एक स्वतंत्र, सभ्य देश में हमें अपने से अलग लोगों को सम्मान देना सीखना ही होगा। राज्य-व्यवस्था को शयन कक्ष से बाहर ही रहना चाहिए। आइए, हम अपनी खुली, उल्लासपूर्ण परम्पराओं से सीखें, जहां समृद्ध, फलते-फूलते जीवन का रहस्य जीवन के चार पुरुषार्थ के बीच सौहार्दपूर्ण संतुलन में निहित है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

सड़क-सुरक्षा बढ़ा रहे हैं 'यूएन डिकेड ऑफ एक्शन' के उपाय

सेकंड आर्टिकल

ट्रांसपोर्ट

नरेश कुमार सिन्हा
पूर्व महानिदेशक, रोड ट्रान्सपोर्ट

किसी नई सड़क से लोगों की अपेक्षा होती है अच्छी राइडिंग क्वालिटी की सतह और दुर्घटनाओं में कमी। लेकिन अच्छी राइडिंग क्वालिटी के साथ वाहनों की रफ्तार निर्धारित गति सीमा से बहुत ज्यादा होने लगती है और यातायात के नियमों का अतिक्रमण होने लगता है। अतः दुर्घटनाएं बढ़ जाती हैं। भारत में सड़क दुर्घटना में प्रतिवर्ष करीब 1.50 लाख लोग मौत का शिकार हो जाते हैं, जो सारी दुनिया में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले लोगों का 10 प्रतिशत है। सड़क दुर्घटना में हर चार मिनट में एक व्यक्ति की जीवनलीला समाप्त हो जाती है। इन दुर्घटनाओं में देश को 2 लाख करोड़ रुपए की आर्थिक क्षति वहन करनी पड़ती है।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने 2011 में 'डिकेड ऑफ एक्शन' योजना शुरू की। इसके अंतर्गत 2011-2020 के बीच सड़क दुर्घटनाओं में मृतक-संख्या आधी करने का लक्ष्य है। दुर्घटनाओं के विश्लेषण और शोध से यह निर्धारित हुआ है कि सड़क सुरक्षा सिर्फ सड़क की समस्या नहीं है, बल्कि और भी कारण हैं। इन सभी कारणों को ध्यान में रखकर नया मोटर व्हीकल एक्ट संसद में विचाराधीन है। सड़क दुघर्टनाएं घटाने के लिए कुछ उपायों पर काम हो रहा है। एक, सड़कों की टेक्नोलॉजी में पैदल चलने वालों से लेकर वाहन चालकों तक सभी यूज़र्स का ध्यान रखा गया हो। दो, जागरूकता। सभी उपयोगकर्ताओं खासतौर पर बच्चों को सड़क के नियमों से वाकिफ कराना ताकि बड़े होकर वे नियमों का पालन करने वाले नागरिक बनकर सड़क सुरक्षा बढ़ाने में योगदान दे सकें। हेलमेट पहनकर दोपहिया वाहन चलाना, कार में सीट बेल्ट लगाना, शराब पीकर वाहन न चलाना, गाड़ी गतिसीमा में चलाना, जेब्रा क्रॉसिंग पर ही सड़क पार करना आदि पर जोर दिया जाए। तीन, नियमों को अमल में लाना चुनौती होती है। नए कानून में पेनल्टी कई गुना बढ़ाने के साथ इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्ट सिस्टम (आईटीएस) पर जोर है ताकि सारा नियंत्रण टेक्नोलॉजी से हो नियमों का उल्लंघन करने वाला बच न सके। चार, वाहनों में सीट बेल्ट, एयर बैग आदि सुरक्षा उपायों की मौजूदगी और उनके उपयोग पर जोर दिया गया है। पांच, पुलिस पूछताछ के डर से लोग दुर्घटना में घायल लोगों को अस्पताल पहुंचने में झिझकते हैं। सरकार ने हाल ही में 'गुड समारिटन लॉ' बनाया जिसके तहत घायलों की मदद करने वाले लोगों से पुलिस कोई पूछताछ नहीं करेगी। आम जनता को घायलों को हैंडल करने की ट्रेनिंग जरूरी है। एम्बुलेंस की सेवा ज्यादा से ज्यादा उपलब्ध कराने से घायलों को घटना के एक घंटे के अंदर अस्पताल पहुंचाया जा सकता है। इससे उनके बचने की संभावना बढ़ जाती है साथ ही ट्रॉमा केयर सेंटर और रिहेबिलिटेशन सेंटर भी खोलने होंगे। कई सरकारी, गैर-सरकारी और निजी संस्थान इन उपायों पर काम कर रहे हैं। नतीजा यह है कि सड़क दुर्घटनाओं में मौतों की संख्या करीब 3-4 साल से स्थिर है, जबकि जनसंख्या और वाहनों की संख्या में वृद्धि हुई है।

वेब भास्कर

फोटोग्राफी... एस्टोनिया के पाल्डिस्की में 1994 तक विदेशियों, आम जनता के जाने पर रोक थी, आज मशहूर पर्यटन स्थल

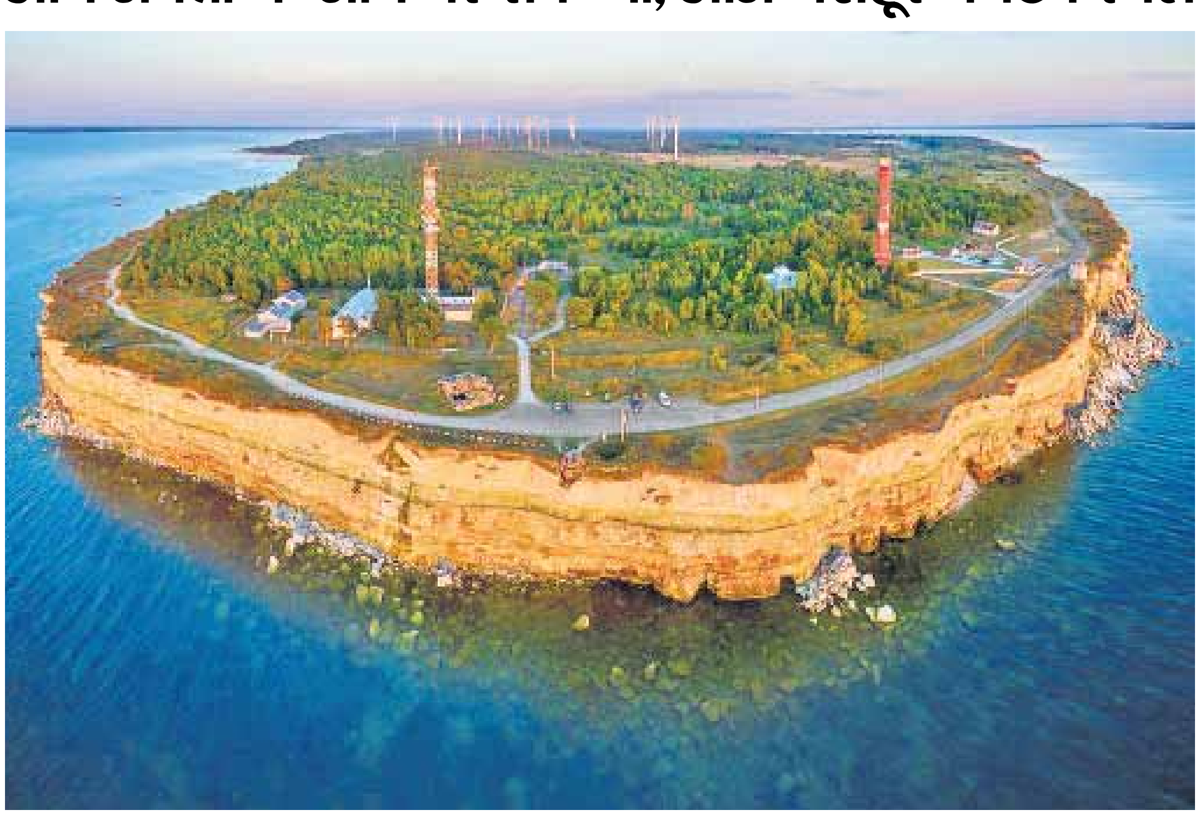

यह फोटो सोवियत संघ से अलग हुए एस्टोनिया के पाल्डिस्की की है। बाल्टिक सागर के किनारे स्थित करीब 4,000 आबादी वाली यह जगह सामरिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है। 23 जून 1912 को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस के शासक निकोलाई-II और जर्मनी के विलहेल्म-II की मुलाकात इसी जगह हुई थी। बाल्टिक सागर के किनारे होने की वजह से रूस ने इसे बाल्टिस्की नाम दिया था, जिसे एस्टोनिया सरकार ने पाल्डिस्की कर दिया है। यह सैन्य रूप से इतना महत्वपूर्ण था कि 1994 तक तो यहां आम लोगों और विदेशियों के जाने पर पूरी तरह रोक थी, लेकिन आज यह मशहूर पर्यटन स्थल बन चुका है। हालांकि आज भी यहां सेना की इन्फैंट्री बटालियन तैनात है। इसके अलावा यहां आधुनिक रेलवे स्टेशन, बार, होटल से लेकर तमाम आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। इस फोटो को एस्टोनिया के हापसालू में रहने वाले फोटोग्राफर उवे-रैन यूसरैंड ने लिया है। • uve-rain Uusrand.com

टॉप ऑन वेब • reddit

'किम जोंग से प्यार हो गया' वाला ट्रम्प का बयान टॉप ट्रेंड में

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने उत्तर कोरिया के शासक किम जोंग उन के साथ अपने संबंधों को लेकर कही बात सोशल मीडिया पर टॉप ट्रेंडिंग में है। दरअसल, ट्रम्प ने हाल ही में वेस्ट वर्जीनिया में एक रैली में कहा था कि उन्हें और किन जोन उन को एक-दूसरे से प्यार हो गया है। ट्रम्प सीनेट कैंडीडेट और स्टेट अटॉर्नी जनरल पैट्रिक मॉरिसी के लिए रैली करने यहां पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने उत्तर कोरिया और किम जोंग उन के साथ अमेरिका के बदलते रिश्तों पर कहा, 'उन्होंने मुझे खूबसूरत पत्र लिखे, हमें प्यार हो गया है।'

नवंबर 2017 में दक्षिण कोरिया की नेशनल असेम्बली को संबोधित करते हुए ट्रम्प ने उत्तर कोरिया को चेतावनी दी थी कि अमेरिका को हल्के में न लें। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए उत्तर कोरिया के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि ट्रम्प सठिया गए हैं। इसके बाद से दोनों नेताओं के बीच एक-दूसरे को लेकर जमकर बयानबाज़ी चली। यहां तक कि बात परमाणु बटन तक पहुंच गई थी। लेकिन बाद में धीरे-धीरे दोनों देशों के बीच बातचीत शुरू हुई, जो ट्रम्प और किम जोंग उन की मुलाकात तक पहुंची। इसके बाद से दोनों नेता एक-दूसरे की तारीफ कर रहे हैं। ट्रम्प ने इस बार कहा, 'वो मुझे पसंद करते हैं, मैं उन्हें पसंद करता हूं। वे मुझे बेहद खूबसूरत पत्र लिखते हैं जो बेहद शानदार हैं। हमें प्यार हो गया है।' इसके बाद से इन दोनों को सोशल मीडिया पर काफी स्पेस मिला है और यूजर्स इन्हें जमकर ट्रोल कर रहे हैं।

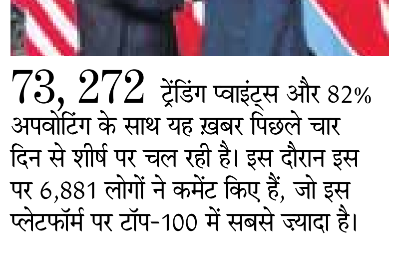

73, 272 ट्रेंडिंग प्वाइंट्स और 82% अपवोटिंग के साथ यह ख़बर पिछले चार दिन से शीर्ष पर चल रही है। इस दौरान इस पर 6,881 लोगों ने कमेंट किए हैं, जो इस प्लेटफॉर्म पर टॉप-100 में सबसे ज़्यादा है।

नॉलेज भास्कर

निवेश के टिप्स
रिटायरमेंट प्लानिंग

रिटायरमेंट के लिए जितनी जल्दी निवेश करेंगे, उतना ज्यादा फायदा

अजय केडिया,
एमडी, केडिया एडवाइज़री, मुंबई

यह तय है कि हमें कभी न कभी रिटायर होना ही होता है। रिटायरमेंट हमारे जीवन का वह चरण होता है जब हम वो सब कुछ करना चाहते हैं जो हमने सोचा है। लेकिन इसे हम कब, कहां और कैसे करना चाहते हैं यह ध्यान रखना बेहद ज़रूरी है। यह हमारे जीवन का वह वक्त भी होता है जब हमारी कमाई कम हो जाती और खर्चे बढ़ जाते हैं। इसमें कई अनचाहे खर्च होते हैं जिनके लिए हम अक्सर तैयार नहीं होते। ऐसे में हमें रिटायरमेंट के बाद जीवनसाथी, परिवार, घूमना-फिरना और रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए प्लान करना ज़रूरी है। रिटायरमेंट हमें जीवन के स्वर्णिम क्षणों में देखे गए सपनों को पूरा करने का अवसर भी मुहैया करवाता है।

मौजूदा परिस्थितियों में महंगाई हमारे जीवन की पूरी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण तत्व बन गई है, क्योंकि यह हमारी लाइफस्टाइल को भी महंगा बनाती है। ऐसे में यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि आप अपनी नौकरी या काम करने के दौरान ही रिटायरमेंट के बाद के जीवन के लिए प्लानिंग कर लें। इससे आप रिटायरमेंट के बाद वित्तीय रूप से मजबूत रहेंगे।

इसलिए हमें शुरुआत में ही यह तय कर लेना चाहिए कि रिटायरमेंट के बाद तो हमें अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए कितने पैसों की आवश्यकता होगी। हालांकि इसके लिए हर व्यक्ति के अलग-अलग विचार और प्लान हो सकते हैं कि वह रिटायरमेंट के बाद अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहता है। कुछ लोग दुनिया घूमना चाहते हैं तो कुछ लोग तीर्थयात्रा करना चाहते हैं।

ताकि आपको बच्चों या किसी अन्य पर पूरी तरह निर्भर न रहना पड़े

रिटायरमेंट के बाद की प्लानिंग और निवेश पर ज्यादा से ज्यादा या बेहतर रिटर्न के लिए आपको अपने वर्तमान खर्च, आकांक्षाओं, वर्तमान आयु, रिटायरमेंट की आयु और महंगाई दर को ध्यान में रखना होगा। इसलिए ज्यादा से ज्यादा निवेश करना फायदेमंद होगा ताकि रिटायरमेंट के बाद आपको बच्चों या अन्य किसी पर पूरी तरह आश्रित न रहना पड़े। (जैसा कि फिल्म बागबां में अमिताभ बच्चन और हेमामालिनी को दिखाया गया है। जिनमें बच्चे बारी-बारी से अपने माता-पिता को अपने पास रखने का फैसला करते हैं।)

• **इसे ऐसे समझें**: अगर रिटायरमेंट के बाद आप 5 करोड़ रुपए पाना चाहते हैं, तो आपका निवेश और रकम आपकी उम्र पर निर्भर करता है। अगर हम रिटायरमेंट की उम्र 60 साल और रिटर्न 12% मान लें, तो रिटायरमेंट कॉर्पस यानी रिटायरमेंट के बाद 5 करोड़ रुपए पाने की उम्मीद करते हैं, तो इस तरीके से निवेश करने की ज़रूरत पड़ेगी।

रिटायरमेंट प्लान को हम इन तीन मामलों से समझ सकते हैं

विषय	केस-1	केस-2	केस-3
मौजूदा उम्र	30	40	50
रिटायरमेंट	60	60	60
रिटायरमेंट कॉर्पस	5 करोड़ रु.	5 करोड़ रु.	5 करोड़ रु.
निवेश पर रिटर्न	12%	12%	12%
मासिक निवेश	14,500 रु.	51,000 रु.	2.20 लाख रु.

• ज़ाहिर है, जितनी देरी से रिटायरमेंट प्लान करेंगे, निवेश की रकम उतनी ही ज्यादा होगी। ऐसे में अंग्रेज़ी की कहावत याद रखें- Cost of delay is so costly यानी देरी से किया गया निवेश मंहगा पड़ता है। ऐसे में रिटायरमेंट के बाद ज्यादातर लोग वित्तीय रूप से उतने मज़बूत नहीं हो पाते, जितनी उनकी उम्मीदें होती हैं।

सच तो यह है

अंतरिक्ष से नहीं दिखती द ग्रेट वॉल ऑफ चाइना

आम धारणा है कि चीन की दीवार अंतरिक्ष से नंगी आंखों से दिखाई देती है। विश्व के कई देशों में इस बात को जनरल नॉलेज के रूप में पढ़ाया जाता है। इतना ही नहीं, चीन के तो स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि पृथ्वी पर मानव निर्मित द ग्रेट वॉल ऑफ चाइना ही एक मात्र ऐसा निर्माण है जो अंतरिक्ष से दिखाई देता है। यह लेसन वहां की कक्षा छह की किताब में है। लेकिन यह बात सच नहीं है।

अमेरिकी अंतरिक्ष संस्था नासा की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार वॉल ऑफ चाइना को नंगी आखों से देखना संभव नहीं है। बल्कि फोटोग्रॉफी उपकरणों से भी इसे देखना

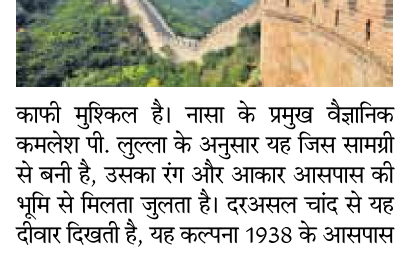

काफी मुश्किल है। नासा के प्रमुख वैज्ञानिक कमलेश पी. लुल्ला के अनुसार यह जिस सामग्री से बनी है, उसका रंग और आकार आसपास की भूमि से मिलता जुलता है। दरअसल चांद से यह दीवार दिखती है, यह कल्पना 1938 के आसपास की गई थी, यानी चांद पर मनुष्य के कदम रखने से काफी पहले। बाद में इस कल्पना ने तथ्य का रूप ले लिया। बीबीसी और टेलीग्राफ की रिपोर्ट्स के अनुसार भी चीनी अंतरिक्ष यात्री यांग लिवी ने दावा किया है कि अंतरिक्ष से चीन की दीवार नहीं दिखती। यांग ने अपने इंटरव्यू में कहा कि पिछले साल जब मैं अंतरिक्ष में था तो मुझे दीवार नहीं दिखी। हमारी दीवार ही क्या, अंतरिक्ष से पृथ्वी की कोई भी चीज दिखाई नहीं देती। मैंने अपने स्पेसक्राफ्ट से धरती के पूरे 21 घंटे चक्कर लगाए और वॉल ऑफ चाइना को देखने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं दिखा।